मेरठ सम्भाग में जनसंख्या वृद्धि और विकास

एक भौगोलिक विश्लेषण

डा० भीकम सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
भूगोल विभाग
मिहिर भोज पी०जी० कॉलेज, दादरी,
गौतमबुद्धनगर, उ०प्र०

स्वतंत्र भारत में समस्त विकास की क्षेत्रीय असुन्तलन समस्या ने भूगोलवेत्ताओं, अर्थशास्त्रियों व नियोजनकर्ताओं का ध्यान आकर्षित किया है। यद्यपि समस्या के समाधान हेतु विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में अनेकों विकासात्मक कार्यक्रम क्रियान्वित किये गये हैं परन्तु समस्या आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है, ऐसा प्रतीत होता है कि विकासात्मक प्रणाली से आबद्ध विभिन्न अवयव अपनी भूमिका नहीं निभा पाये हैं। जिससे विकास कार्यक्रमों को आंशिक सफलता ही मिली है और असंतुलन समस्या स्थायी रूप से बनी हुई है। इसका प्रमुख कारण यह है कि योजनाओं में जिन नीतियों, लक्ष्यों, प्राथमिकताओं आदि का निर्धारण किया गया उनमें जनसंख्या के आगामी आकार एवं वृद्धि को महत्वपूर्ण आधार नहीं माना गया। जबकि जनसंख्या की स्थानिक संरचना से सम्बद्ध गतिशीलता ने समय–समय पर योजनाओं को सबसे अधिक प्रभावित किया है। जिससे विकास स्तर कुछ नाभिकों के इर्द–गिर्द ही पूंजीभूत हो गया है। भारतवर्ष में इससे सम्बन्धित अनेक अध्ययन समय–समय पर हुए हैं। डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्निहोत्री ने जनसंख्या समस्या और समाधान पर 1983 में एक मोनोग्राफ तैयार किया जिसमें उन्होंने जनांकिकी विशेषता कैसे सामाजिक तथा आर्थिक दशाओं को प्रभावित करती

है, का अध्ययन किया। जनसंख्या वृद्धि और क्षेत्रीय विकास से संबंधित एक अध्ययन रूसी अर्थशास्त्री डॉ0 मात्वे कूँचीकोव ने किया, उन्होंने भारत के सन्दर्भ में आशंका व्यक्त करते हुए कहा था कि "यदि भारत अपनी जनसंख्या को 'नियन्त्रित नहीं' करता है तो उसके आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक लाभ शून्य में बदल जायेंगे।" आर0एस0 त्रिपाठी एवं आर0पी0 तिवारी[1] ने विकासशील देशों में जहां जनसंख्या वृद्धि व गरीबी दोनों अधिक हैं, में जनसंख्या वृद्धि एवं आवास समस्या की विकरालता का अध्ययन मध्यप्रदेश की रायपुर सम्भाग के सन्दर्भ में किया है। जनांकिकीय प्रारूप और निर्धनता का अध्ययन ग्रामीण विकास के सन्दर्भ में एस0 गुप्ता, एन0एन0 शर्मा तथा बी0 शर्मा[2] ने किया जिसमें तथ्यों का विश्लेषण करने पर शिक्षा के अभाव को ही मुख्य कारक माना।

ग्रामीण विकास के चार दशकों के कार्यक्रमों एवं उपलब्धियों का अध्ययन तथा विश्लेषण करने पर ग्रामीण विकास में दो प्रमुख कमियों 1– आर्थिक ढांचे में अमूल चूल परिर्वतन, 2– जनसंख्या नियंत्रण पर आवश्यकतानुसार ध्यान न देना, का अध्ययन डॉ0 विश्वामित्र उपाध्याय[3] ने किया। जनसंख्या की समस्या और ग्रामीण विकास को मद्देनजर रखते हुए एक अध्ययन डॉ0 सी0एम0 चौधरी[4] ने किया जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में संतुलित आर्थिक विकास करके लोगों के जीवन स्तर को उन्नत करने के उपाय सुझाये गये । इन अध्ययनों के अतिरिक्त देश के सामाजिक, आर्थिक विकास के संदर्भ में जनसंख्या असन्तुलन की समस्या पर अध्ययन करने वाले विद्वानों की एक लम्बी सूची है जिसमें मौ0 इरफान[5], आर0एच0 चौधरी[6], डेविड सैड्डन[7] मुख्य हैं। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य ग्रामीण विकास के विभिनन अवयवों तथा जनसंख्या के विभिन्न घटकों के मध्य स्थानिक विभिन्नताओं एवं अर्न्तसम्बन्ध का वस्तुपरक विश्लेषण करना है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन मेरठ सम्भाग के पांच जनपदों मेरठ, हापुड़, गाजियाबाद, गौतमबुद्धनगर, बुलन्दशहर के 40 विकासखण्डों में समाहित है। इसका विस्तार $28^0 4'$ उत्तरी अक्षांश से $29^0 15'$ उत्तरी अक्षांश तक तथा $77^0 6'$ पूर्वी देशान्तर से $78^0 7'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य फैला है। इसका कुल प्रतिवेदित

क्षेत्रफल 970335 हैक्टेर है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहां 9203099 व्यक्ति निवास करते हैं। अध्ययन क्षेत्र का औसत जनघनत्व 719.33 व्यक्ति प्रति किमी0 है। भौगोलिक रूप से इस क्षेत्र को गंगा–यमुना मैदान का ऊपरी दोआब कहते हैं। एस0जी0 बुराड[8] ने इस भाग को दरार घाटी माना है जिसकी गहराई 32 किमी0 तक आंकी गयी है जिससे नदियों के निक्षेप द्वारा मैदान की उत्पत्ति हुई। आर0डी0 ओल्डहम[9] ने इस मैदान की उत्पत्ति का मुख्य कारण नीचे के पदार्थों का विस्थापन हो जाने को माना है। डी0एन0 वाडिया[10] ने आद्यकल्प की चट्टानों से इस मैदान का निर्माण माना है। इस दोआब में बांगर व खादर विषमतायें विकास कार्यों को अप्रत्यक्ष तथा प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती रहती है।

विधि तन्त्र एवं आंकड़ों का चयन

अध्ययन के विश्लेषण हेतु विकासखण्ड स्तर पर निम्नांकित इंगितकों का चयन किया गया है–

1. **कृषि विकास से सम्बन्धित–** कुल क्षेत्रफल में कृषित भूमि का प्रतिशत 2. शुद्ध कृषित भूमि में सिंचित भूमि का प्रतिशत 3. प्रति हजार हैक्टेर भूमि पर नलकूपों की संख्या 4. प्रति हजार हैक्टेर भूमि पर पम्पिंग सेटों की संख्या 5. प्रति हजार हैक्टेर भूमि पर ट्रैक्टरों की संख्या 6. उर्वरकों का प्रयोग 7. उत्पादकता।
2. **औद्योगिक विकास से सम्बन्धित–** 1. प्रति हजार जनसंख्या पर औद्योगिक इकाईयां 2. कुल श्रमिकों में औद्योगिक श्रमिकों का प्रतिशत 3. औद्योगिक उत्पादन (रूपयों में)
3. **शैक्षणिक विकास से सम्बन्धित–** 1. प्रति लाख जनसंख्या पर प्राइमरी पाठशाला 2. प्रति लाख जनसंख्या पर जूनियर हाईस्कूल 3. प्रति लाख जनसंख्या पर इन्टर व डिग्री कॉलेज 4. साक्षरता प्रतिशत।
4. **समग्र विकास–** कृषि विकास, औद्योगिक विकास, शैक्षणिक विकास।

शोध पत्र में द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त विभिन्न आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। ये आंकड़े अधिकांशतया प्रकाशित विभागों से सम्बन्धित हैं जिनमें मेरठ, हापुड़, गाजियाबाद, गौतमबुद्धनगर, बुलन्दशहर जनपदों की जिला सांख्यिकीय पत्रिका 2014–15 से अधिकांश आंकड़ों का प्रयोग किया गया

है। इसके अतिरिक्त औद्योगीकरण से सम्बन्धित आंकड़ों को जिला उद्योग केन्द्रों द्वारा सम्पादित 'उद्योग निर्देशिका' नामक सन्दर्भ ग्रन्थ से एकत्रित किया है।

एकत्रित आंकड़ों को उपयुक्त तालिकाओं में परिणित करके/कोटि क्रम विधि से कृषि विकास, औद्योगिक विकास, शैक्षणिक विकास, जनसंख्या घनत्व के विभिन्न अवयवों के साथ–साथ समग्र ग्रामीण विकास का स्तर निर्धारित किया है। इसके साथ–साथ सांख्यिकीय विधियों के परीक्षण के तर्कसंगत निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये हैं। विभिन्न विकास इंगितांकों तथा जनसंख्या कारकों के मध्य अर्न्तसम्बन्धों को स्पष्ट करने के लिए सह–सम्बन्ध गुणांक का सहारा लिया गया है।

जनसंख्या और कृषि विकास

मेरठ सम्भाग में भी देश के अन्य क्षेत्रों की तरह जनसंख्या का असामान्य वितरण है इसका कारण यहां की भौगोलिक स्थितियां, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा आर्थिक परिस्थितियां, विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न रूपों को विकसित करती है। यहां पर लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि तथा कृषि से सम्बन्धित कार्यों में लगी है। तालिका संख्या–1ए 1बी का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि मेरठ सम्भाग में सबसे अधिक ग्रामीण जनसंख्या घनत्व वाले विकासखण्ड लोनी तथा बुलन्दशहर हैं। यहां पर जनसंख्या घनत्व क्रमशः 1298 तथा 1066 प्रतिशत वर्ग किमी0 है। इन विकासखण्डों में अधिक घनत्व होने के कारण समतल तथा सिंचित भूमि के साथ–साथ इन क्षेत्रों में ग्रामीण श्रमिकों के लिए रोजगार के पर्याप्त अवसर हैं। इसके विपरीत गंगा के किनारे लगे विकासखण्डों में अपेक्षाकृत कम जनसंख्या घनत्व है। जिसका कारण खादर वाले क्षेत्रों में कृषि क्षेत्र की न्यूवता तथा प्रति हैक्टेयर उत्पादन का कम होना है। इन विकासखण्डों में हस्तिानापुर प्रमुख हैं जहां पर जनसंख्या घनत्व क्रमशः 348 प्रति वर्ग किमी0 है।

मेरठ सम्भाग उत्तर प्रदेश के प्रमुख कृषि क्षेत्रों में से एक है। यहां की अर्थव्यवस्था में कृषि उत्पादन का बड़ा योगदान है। सन् 2014–15 में सम्पूर्ण सम्भाग का क्षेत्रफल 970335 हैक्टेर था। जिसमें लगभग 6129 करोड़ रूपये का कृषि उत्पादन होता है। भौतिक दृष्टि से सम्पूर्ण सम्भाग

की बनावट में कांप मिट्टी का निक्षेपण है। कहीं–कहीं भूड़ तथा ऊबड़–खाबड़ रेतीली मिट्टी के क्षेत्र भी देखने को मिलते हैं। तालिका 1ए, 1बी का तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि कृषि विकास के दृष्टिकोण से अति उच्च अगौता विकासखण्ड हैं जहां जनसंख्या घनत्व 775 प्रति वर्ग किमी0 है तथा निम्न दादरी है। जहां जन घनत्व मध्यम है। लोनी विकासखण्ड में जन घनत्व अति उच्च है। जबकि कृषि विकास भी उच्च है। इसके अतिरिक्त दनकौर, जेवर विकासखण्डों में जन घनत्व मध्यम श्रेणी तथा कृषि विकास न्यून है। कृषि विकास और जनसंख्या घनत्व का सह सम्बन्ध (0.128) न्यून घनात्मक है तथा आर्थिक घनत्व = (जनसंख्या आकार/उत्पादक सूचकांकx100) और कृषि विकास का सह सम्बन्ध उच्च ऋणात्मक –0.781 है। आर्थिक घनत्व ही किसी क्षेत्र की जनसंख्या के बीच के सम्बन्ध को सूचित करता है। अर्थात मेरठ सम्भाग में जनसंख्या बढ़ने से आर्थिक पक्ष घटता है जो स्वाभाविक भी है। जनसंख्या के कार्यिकी घनत्व और कृषि विकास में न्यून घनात्मक सह सम्बन्ध आना इस तथ्य को इंगित करता है कि कृषि विकास में मानवीय श्रम की महत्वपूर्ण भूमिका है। तालिका 1ए, 1बी से स्पष्ट होता है कि कृषि विकास में अधिकांश पूर्ववत स्थिति है।

जनसंख्या घनत्व और औद्योगिक विकास

औद्योगिक केन्द्रों के समीपवर्ती क्षेत्रों में जनसंख्या सघन रूप से फैली होती है। अध्ययन क्षेत्र के इन भागों में जनसंख्या घनत्व तथा वितरण में काफी विभिन्नता आंकी गयी है। तालिका 1ए, 1बी का तुलनात्मक अवलोकन करने के पश्चात यह निष्कर्ष स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि औद्योगिक विकास में अति उच्च श्रेणी वाले विकाखण्ड दादरी, सिकन्द्राबाद है जबकि जन घनत्व में मध्यम तथा दादरी विकासखण्ड में न्यून जन घनत्व नहीं है। इसके विपरीत न्यून जनसंख्या घनत्व वाले विकासखण्डों में भी औद्योगिक विकास निम्न श्रेणी का है। इसका तात्पर्य यह है कि अध्ययन क्षेत्र के विकसित औद्योगिक केन्द्रों में स्थानीय श्रमिकों की अधिकता है। जिससे जनसंख्या का घनत्व अपेक्षाकृत अधिक नहीं रहता। इसके अतिरिक्त औद्योगिक शहरों के ग्रामीण क्षेत्रों में भी अब सुरक्षा की व्यवस्था, जीवन रक्षण सुविधाएं प्राप्त होने लगी हैं। अतः श्रमिक सस्ते और

स्वस्थ्य वातावरण में रहना चाहता है। इस कारण भी इन क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व नहीं बढ़ा। जनसंख्या घनत्व और औद्योगिक विकास का सह सम्बन्ध अतिन्यून घनात्मक 0.034 है जिसका तात्पर्य यह है कि जनसंख्या घनत्व की वृद्धि ने औद्योगिक विकास के लिए विशेष प्रभाव नहीं छोड़ा है।

जनसंख्या घनत्व और शैक्षणिक विकास

तालिका 1ए, 1बी का तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि जहां एक ओर जनसंख्या का घनत्व मानव शक्ति को समृद्धि का संकेत देता है वहीं शैक्षणिक विकास में समानता देखने को नहीं मिलती क्योंकि लोनी, बुलन्दशहर सर्वाधिक जनघनत्व वाले विकासखण्ड हैं जबकि इनमें शैक्षणिक विकास मध्यम, उच्च हैं। इसके अतिरिक्त उच्च एवं मध्यम जनघनत्व वाले विकासखण्डों में शैक्षणिक विकास न्यून है। इसकी पुष्टि दोनों का सह सम्बन्ध करता है जिसका मान 0.1288 है। जनसंख्या घनत्व तथा शैक्षणिक विकास के स्थानिक प्रतिरूपों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि इस सम्भाग के मध्य पूर्व की ओर जनसंख्या वृद्धि का झुकाव है परन्तु शैक्षणिक विकास की परिधि उत्तर में सिमट कर रह गयी है। इस विश्लेषण से यह भी स्पष्ट है कि शैक्षणिक विकास पर जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव नहीं है अन्यथा सर्वाधिक जनघनत्व वाले विकासखण्ड ही सर्वाधिक शैक्षणिक स्तर वाले होते।

तालिका–1ए

मेरठ सम्भाग में जनसंख्या घनत्व

क्र0सं0	विकासखण्ड	जनसंख्या घनत्व प्रतिव्यक्ति 2011	क्र0सं0	विकासखण्ड	जनसंख्या घनत्व प्रतिव्यक्ति 2011
1	सरूरपुर खुर्द	881	21	दनकौर	408
2	सरधना	808	22	जेवर	365
3	दौराला	754	23	बिसरख	433
4	मवाना कलां	665	24	दादरी	412
5	हस्तिनापुर	348	25	सिकन्द्राबाद	723
6	परिक्षितगढ़	452	26	गुलावटी	905
7	माछरा	866	27	लखावटी	681
8	रोहटा	655	28	बुलन्दशहर	1066
9	जानीखुर्द	865	29	शिकारपुर	637
10	मेरठ	427	30	भवन बहादुर नगर	645
11	रजपुरा	974	31	स्याना	611
12	खरखौदा	613	32	जहांगीराबाद	741
13	धौलाना	944	33	खुर्जा	605
14	हापुड़	981	34	अरनिया	640
15	सिम्भावली	885	35	पहासू	719
16	गढ़ मुक्तेश्वर	588	36	ऊँचागांव	723
17	भोजपुर	779	37	दानपुर	776
18	मुरादनगर	630	38	डिबाई	854
19	रजापुर	956	39	अनूपशहर	685
20	लोनी	1298	40	अगौता	775

तालिका–1बी

मेरठ सम्भाग में जनसंख्या घनत्व एवम् ग्रामीण विकास प्रारूप

क्र0 सं0	विकासखण्ड	जनसं0 घनत्व $\frac{\times}{\overline{\times}}$	कृषि विकास $\frac{\times}{\overline{\times}}$	औद्यो0 विकास $\frac{\times}{\overline{\times}}$	शैक्ष0 विकास $\frac{\times}{\overline{\times}}$	क्र0 सं0	विकासखण्ड	जनसं0 घनत्व $\frac{\times}{\overline{\times}}$	कृषि विकास $\frac{\times}{\overline{\times}}$	औद्यो0 विकास $\frac{\times}{\overline{\times}}$	शैक्ष0 विकास $\frac{\times}{\overline{\times}}$
1	सरूरपुर खुर्द	1.22	1.01	0.53	1.37	21	दनकौर	0.57	0.91	0.51	0.59
2	सरधना	1.12	1.41	0.61	0.87	22	जेवर	0.50	0.89	0.50	0.58
3	दौराला	1.04	0.99	0.87	0.83	23	बिसरख	0.60	0.51	0.91	0.86
4	मवाना कलां	0.92	1.09	0.97	0.63	24	दादरी	0.57	0.50	1.99	1.37
5	हस्तिनापुर	0.48	0.62	0.53	0.69	25	सिकन्द्राबाद	1.00	0.53	1.79	1.21
6	परिक्षितगढ़	0.63	0.79	0.54	0.62	26	गुलावटी	1.26	0.56	0.87	0.97
7	माछरा	1.20	0.82	0.57	1.17	27	लखावटी	0.94	0.69	0.53	0.86
8	रोहटा	0.91	0.81	0.69	0.87	28	बुलन्दशहर	1.48	0.81	0.89	0.87
9	जानीखुर्द	1.20	0.79	0.51	0.91	29	शिकारपुर	0.98	0.79	0.61	0.57
10	मेरठ	0.59	0.79	0.99	1.99	30	भवन बहादुर नगर	0.89	0.71	0.53	0.58
11	रजपुरा	1.35	0.79	0.91	0.73	31	स्याना	0.85	0.69	0.53	0.53
12	खरखौदा	0.85	0.69	0.51	0.82	32	जहांगीराबाद	1.03	0.57	0.51	0.55
13	धौलाना	1.31	0.69	0.87	0.62	33	खुर्जा	0.84	0.63	0.61	1.97
14	हापुड़	1.36	0.89	1.11	0.99	34	अरनिया	0.88	0.61	0.51	0.59
15	सिम्भावली	1.23	0.87	0.57	0.97	35	पहासू	0.99	0.71	0.50	0.52
16	गढ़ मुक्तेश्वर	0.81	0.61	1.32	0.61	36	ऊँचागांव	1.00	0.72	0.51	0.53
17	भोजपुर	1.08	0.61	1.79	0.62	37	दानपुर	1.07	0.79	0.50	0.57
18	मुरादनगर	0.88	0.56	0.57	0.63	38	डिबाई	1.18	0.81	0.50	0.60
19	रजापुर	1.33	0.51	0.59	0.69	39	अनूपशहर	0.95	0.81	0.51	1.01
20	लोनी	1.88	0.56	0.51	0.71	40	अगौता	1.07	1.60	0.81	0.71
							$\overline{\times}$	719.33	412.31	51298 8.33	53.48
							उच्चतम	1.60	1.88	1.99	1.97
							न्यूनतम	0.50	0.48	0.50	0.52

जनसंख्या और समग्र ग्रामीण विकास

इस तथ्य से इंकार करना असंभव है कि हमारी पुनीत इच्छाओं और अधिकतम प्रयत्नों के बावजूद ग्रामीण विकास में वृद्धि नहीं हुई। ग्रामीण विकास की समस्या हमेशा हमारे दामन से सटी रही। प्रो0 सी0एन0 वकील ने यह मत व्यक्त किया कि ग्रामीण विकास में वृद्धि न होने का मूल कारण है जनसंख्या वृद्धि होना[12]। अध्ययन क्षेत्र के संदर्भ में जनसंख्या घनत्व और ग्रामीण विकास के सह सम्बन्ध का अवलोकन करते हैं तो न्यून घनात्मक (0.352) सहसम्बन्ध को प्रमाणित करता है। इसका तात्पर्य यह है कि सम्भाग में सन्तुलित ग्रामीण विकास की प्रक्रियाओं का सम्पादन जनसंख्या वृद्धि के साथ सुमेल नहीं है। इस लक्ष्य को हम भारत के संदर्भ में भी देख सकते हैं कि भारत के ग्रामीण विकास की कोई भी योजना जनसंख्या नियंत्रण के बिना सफल नहीं हो सकती क्योंकि जनसंख्या वृद्धि के सभी तत्व आधुनिकीकरण की ओर इंगित नहीं करते जिनसे अपार उत्पादकता वृद्धि तथा रोजबार विस्तार की सम्भावनाओं का दोहन किया जा सकता है।

तालिका संख्या 1ए, 1बी का अवलोकन करने से ग्रामीण विकास के सन्तुलन की स्थिति स्पष्ट हो जाती है जिसमें कृषि विकास का सामान्यीकृत मूल्य सर्वाधिक विकासखण्ड अगौता एवं सरधना में तथा न्यूनतम बिसरख तथा दादरी विकासखण्ड में देखने को मिलता है जिसका कारण जनसंख्या की वृद्धि के साथ आधुनिक परिस्थितियों का सम्यक समावेश का अभाव होना है अन्यथा विकाखण्डों के विकास में विषमता देखने को नहीं मिलती। ऐसी स्थिति औद्योगिक विकास में है जिसमें सर्वाधिक सामान्यीकृत सूचकांक दादरी (1.99) विकाखण्ड तथा न्यूनतम जेवर (0.50) विकासखण्ड का है जबकि जनसंख्या घनत्व के इंगितक में विषमता कम स्पष्ट होती है।[13] इसका कारण यही है कि विकास के कार्य करने का प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन न होना। जो कृषि विकास, औद्योगिक विकास, शैक्षणिक विकास को प्रभावित कर सकता है लेकिन जनसंख्या वृद्धि के लिए हमें किसी कार्यक्रम पर निर्भर नहीं रहना पड़ता तथा वित्तीय एवं गैर वित्तीय सुविधा प्रदान किये बिना भी यह कार्यक्रम सफलता से क्रियान्वित होता है। अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्र में विकास को संतुलित करने के लिए हमें जनसंख्या पर प्रभावी नियंत्रण लगाना होगा जिसके लिए कुछ उपाय कारगर सिद्ध हो सकते हैं जिनमें निरक्षरता उन्मूलन, शिक्षा में जनसंख्या पाठ्यक्रम का समावेश, परिवार नियोजन का प्रभावी क्रियान्वयन तथा स्वयंसेवी संगठनों का सहयोग महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. Tripathi, R.S. & Tiwari R.P. (1992) "Hausing Problems in Raipur Division of Madhya Pradsh". The Geographical Observer Vol.27, PP. 9-15
2. Gupta, S, Sharma N, Sharma B (1989) "Demographic Patterns and Poverty among Household in Rural Bihar". in Population Groth & Poverty in Rural South Asia" edited by Gerry Rodgers. Sage Publication, New Delhi.
3. उपाध्याय, विश्वामित्र (1993) 'जनसंख्या वृद्धिः गम्भीर राष्ट्रीय चुनौती', कुरूक्षेत्र, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, पृ0–7
4. चौधरी, सी0एम0 (1993) 'जनसंख्या समस्या एवं ग्रामीण विकास', कुरूक्षेत्र, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, पृ0–69–71
5. Mohammad,Irfan (1989), "Poverty, Class, Structure and Household Demographic Behaiviours in Rural Pakistan. PIDE Research Report, July 1985.
6. Chaudhary, Rafiqual Huda (1989) " Population Presure and its effects on changes in Agrairian Structure and Productivity in Rural Bangladesh" in Population Grouth and Poverty in Rural South Asia edited by Gerry Rodgers. Sage Publication, New Delhi.
7. Sedden, Devid (1989) "Population and Poverty in Nepal" Sage Publication, New Delhi.
8. Burrad, S.G. (1912) "On the origin of the Himaliya Mauntain" G.S.I. Proceedings Paper No. 12, Colcatta, PP-11
9. Oldham, R.D. (1917) G.S.I Proceedings, Vol. 42, Pt. IV, P-61
10. Wadia, D.N. (1939) "Geology and Structure of Northen India" G.S.I. Vol. 73, P-134
11. उत्तर प्रदेश के सांख्यिकीय आंकड़े (2014–15) प्रकाशन संख्या– 82 पृष्ठ–8, 9, 12, 13
12. Sinha, R.K. (1983) Backward Area Development Problems and Prospects, Esterling Publishers, New Delhi, P-198
13. Singh, Bheekam (1991) "Regional Disparities on Agricultural Development in Western U.P." The Geographical observer, Vol.27, P-58